दिनांक 12.10.17

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण से कृत्रिम गर्भादान को बनाया रोजगार का जरिया : एक सफल गाथा

बी.पी. सिंह, महेश चन्द्र एवं राकेश पांडे

कृषि विज्ञान केन्द्र
भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

श्री मुकेश कुमार, जीव विज्ञान में इन्टरमीडिएट तक शिक्षित, उम्र 40 वर्ष, मुरादनगर, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के निवासी है, जिन्होंने 26 वर्ष की आयु में कृषि विज्ञान केन्द्र-भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर से कृत्रिम गर्भादान एवं प्राथमिक पशुचिकित्सा विषय में दो माह (3 जुलाई से 29 अगस्त तक) का वर्ष 2002 में रोजगारपरक व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण समूह में 10 बेरोजगार युवा थे, लेकिन कामयाब हुए केवल श्री मुकेश कुमार, जिन्होंने कृत्रिम गर्भादान एवं प्राथमिक पशुचिकित्सा में प्रवीणता विकसित कर, इसे रोजगार का जरिया बनाया। कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण के उपरान्त, ”बायफ “ नामक संगठन के केन्द्र पर पशुओं में ग्याभिन की जॉच एवं कृत्रिम गर्भादान में निपुणता लाने के लिये अपनी निशुल्क सेवायें दी। वर्ष 2003 में कृषकों को, भुगतान के आधार पर, पैदल एवं

साईकिल द्वारा कृषकों के घर-घर जाकर कृत्रिम गर्भादान की सेवायें प्रदान करना आरम्भ किया। वर्ष 2008 में पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित 4 माह की अवधि का एक और पैरावेट का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप पशुओं के प्राथमिक उपचार एवं कृत्रिम गर्भादान में प्रवीणता एवं कौशलता निखर गयी। श्री मुकेश कुमार शुरूआती दौर में साइकिल द्वारा गॉव- गॉव जाकर कृषकों को सेवा दिते थे। कुछ समय पश्चात, बैंक से ऋण लेकर एक मोटर साइकिल खरीदी जिसके फलस्वरूप, जनपद गााजियाबाद के मुरादनगर टाउन के आसपास के 8 से 10 गॉवों (कनौजा, असालतपुर, सैन्थली, मुरादनगर, जलालपुर, दुहाई, कुर्सी, कृशिलया, कल्लूगढ़ी,सदरपुर इत्यादि) में सेवायें पहुॅचायी। आप प्रतिदिन 10 घंटे से अधिक फील्ड में रहकर कृषकों को सेवायें प्रदान करते है।

आरम्भ में कृत्रिम गर्भादान की दर 3-4 प्रति प्रतिदिन थी जो धीरे-धीरे कृषकों के बीच में कृत्रिम गर्भादान के प्रति जागरूकता तथा रूझान बढ़ाकर इसकी औसतन दर 10-12 प्रति दिन हो गयी, जिसका मुख्य कारण है कृषकों के साथ पैरावेट का अच्छा सम्पर्क, अधिक विश्वाश, त्वरित सेवा तथा कृषकों के बीच कृत्रिम गर्भादान तकनीक की लोकप्रियता। अधिकतम आप द्वारा एक दिन में 18 कृत्रिम गर्भादान किये गये। प्रत्येक गर्भादान के तीन माह पश्चात ग्याभिन पशु की जॉच भी करते है ताकि कृषक को समय

पर पशु के ग्याभिन का पता चल सके। किसानों को समय पर त्वरित सेवा उपलब्ध कराने हेतु तथा युवाओं को रोजगारपरक बनाने हेतु, अन्य दो युवाओं को भी अपने साथ

जोड़ रखा है।

कृत्रिम गर्भादान के अतिरिक्त, श्री मुकेश कुमार पशुओं में सींगरोधन, भैस के पडडों/कटड़ों का बधियाकरण, पशुओं में कृमिनाशन आदि हेतु प्राथमिक उपचार तथा पशुपालन विभाग के तत्वाधान में खुरपका-मुॅहपका एवं गलघोंटू रोग से बचाव हेतु टीकाकरण, जैसी सेवायें भी मुहैया कराते है।

आपके पास 32 लीटर क्षमता का लिक्विड नाइट्रोजन के संग्रह हेतु क्रायोजेन टैंक है जो रू. 32000 में स्वयं खरीदा था जिससे लगभग 40 दिन की पूर्ति हो जाती है। इसके अतिरिक्त, 3 लीटर क्षमता के लिक्विड नाइट्रोजन के क्रायोजेन टैंक द्वारा फील्ड में सीमेन ले जाया जाता है। लिक्विड नाइट्रोजन की दर रू. 25 प्रति लीटर है जोकि औसतन 20-25 लीटर एक प्राईवेट कम्पनी से खरीदते है।

आप बताते है कि फील्ड में कृत्रिम गर्भादान द्वारा गर्भधारण दर 45-50 प्रतिशत है उन्होंने बताया कि यदि सरकार द्वारा गुणयुक्त सीमेन की आपूर्ति हो और किसान समय पर पशुओं में कृत्रिम गर्भादान करा ले तो यह गर्भधारण दर और अधिक बढ़

सकती है। प्रत्येक कृत्रिम गर्भादान से पूर्व भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित “क्रिस्टोस्कोप” नामक उपकरण द्वारा पशु की सही गर्मी की जॉच करते है। सीमेन के लिये आप प्राइवेट कम्पनी पर ही निर्भर रहते है। श्री मुकेश कुमार एक बार में लगभग 100 से 125 सीमेन की डोज खरीदते है जिसका मूल्य लगभग रू.28 से 30 प्रति डोज (साहीवाल एवं एच.एफ. नस्ल का सीमेन रू.28 प्रति डोज तथा मुर्रा नस्ल के सीमेन की डोज रू.30 प्रति डोज) है । श्री मुकेश कुमार, किसान द्वारा मोबाइल पर सम्पर्क करने पर 15 पन्द्रह मिनट में उसके द्वार पर पहुॅच जाते हैं । श्री मुकेश कुमार कृषको के बीच एक भरोसेमन्द एवं विश्वसनीय पैरावेटस है। इस रोजगार से आपकी आय लगभग 1000 रूपये प्रतिदिन है जिसके कारण आज आपके पास मोटर साइकिल, कार तथा मुरादनगर कस्बे में अपना एक पक्का मकान है जिसमें वे स्वयं रह रहे है तथा आपके दोनों बच्चे केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर भी बताया कि हरा चारा उपलब्ध न होना, पशुपालन में कम लाभ, युवाओं का एन.सी.आर. क्षेत्र (दिल्ली,गाजियाबाद, नोएडा, गुड़गॉव, फरीदाबाद इत्यादि) की ओर रोजगार हेतु आकृषित होना आदि कारणों से गॉव में पशुओं की संख्या घट रही है।

श्री मुकेश कुमार, मोबाइल फोन द्वारा कृषकों के सम्पर्क रहते है तथा ज्ञान वर्धन हेतु आई.सी.ए.आर की ”खेती “ एवं अन्य पत्रिकाओं का पाठन करते है। आप कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रयास से श्री मुकेश कुमार एक कुशल एवं योग्य कृत्रिम गर्भादानकर्ता है जो

किसानों की सेवा में सदैव तत्पर रहते है। श्री मुकेश कुमार के शब्दों में ’’मै कृषि विज्ञान केन्द्र का आभारी हूॅ जिसके प्रशिक्षण द्वारा मुझे रोजगार तथा समाज में सम्मानजनक स्थान मिला तथा मेरी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई’’ ।